पाक की नींद उड़ाने फिर वायुसेना में आ गया 'डकोटा'

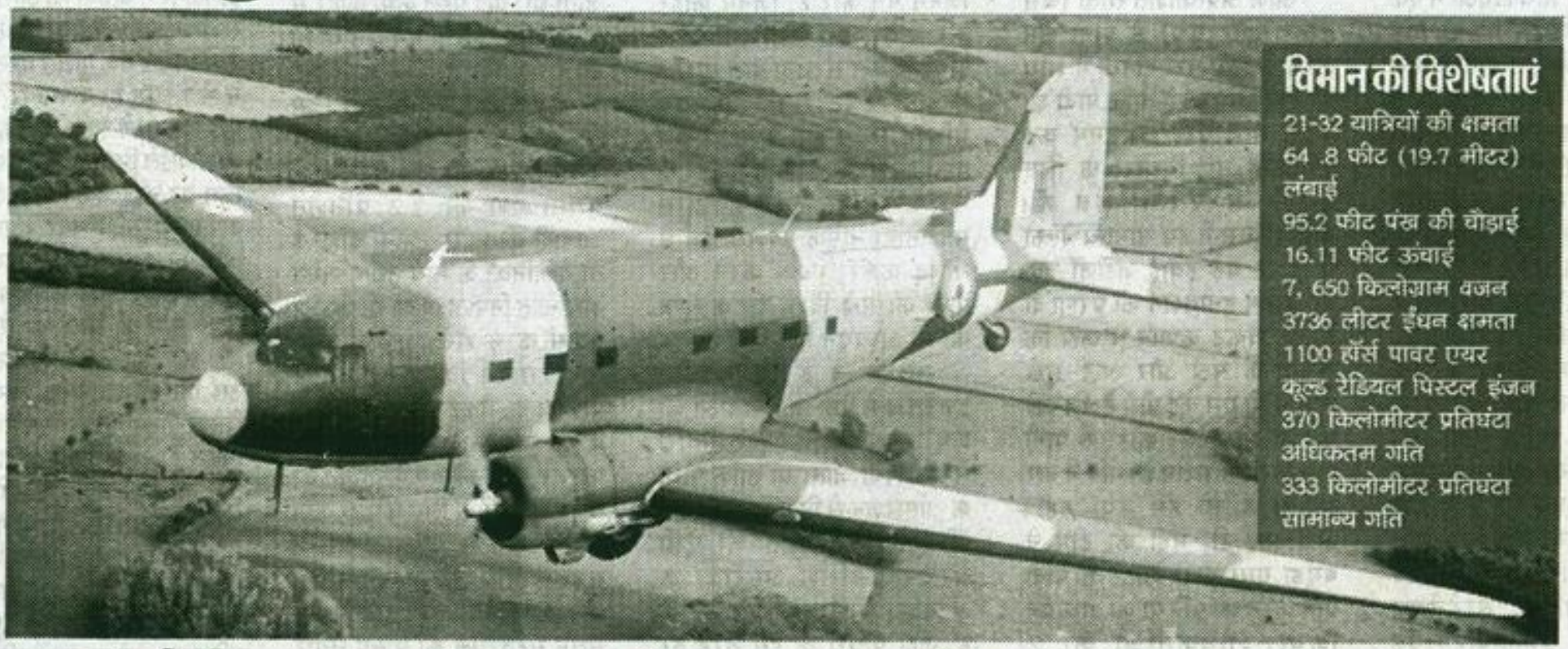

विमान की विशेषताएं

21-32 यात्रियों की क्षमता
64 .8 फीट (19.7 मीटर) लंबाई
95.2 फीट पंख की चौड़ाई
16.11 फीट ऊंचाई
7, 650 किलोग्राम वजन
3736 लीटर ईंधन क्षमता
1100 हॉर्स पावर एयर कूल्ड रेडियल पिस्टल इंजन
370 किलोमीटर प्रतिघंटा अधिकतम गति
333 किलोमीटर प्रतिघंटा सामान्य गति

कबाड़ से निकलकर फिर भारतीय वायुसेना में शामिल हुआ डकोटा विमान

नई दिल्ली। हिंडन एयर फोर्स स्टेशन पर आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में नवीनीकृत डकोटा विमान को औपचारिक रूप से भारतीय वायु सेना में शामिल कर लिया गया। इस विमान को चार दशक से भी ज्यादा समय पहले वायु सेना से सेवानिवृत्त कर दिया गया था। इसे अब नया नाम परशुराम दिया गया है। राज्यसभा सदस्य राजीव चंद्रशेखर ने इस डकोटा डीसी-3 वीपी-905 विमान को कबाड़ से खरीदकर ब्रिटेन में नवीनीकृत कराया है। कार्यक्रम में राजीव चंद्रशेखर के पिता एयर कोमोडोर (सेवानिवृत्त) एमके चंद्रशेखर के हाथों चीफ ऑफ एयर स्टाफ एयर मार्शल बीएस धनोआ ने विमान की चाबियां ग्रहण कीं। इस मौके पर धनोआ ने डकोटा को भारतीय वायु सेना के इतिहास का विशेष विमान बताते हुए कहा कि ब्रिटेन से भारत की यात्रा ने इस विमान की विश्वसनीयता और मजबूती को साबित कर दिया है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध में निभाई अहम भूमिका

परिवहन विमान (कार्गो प्लेन) डकोटा को 1930 में रॉयल इंडियन एयरफोर्स में शामिल किया गया था। इसने द्वितीय विश्वयुद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वर्ष 1947 और 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी इसने अहम भूमिका अदा की थी। 1947 के युद्ध में भारत की जीत और कश्मीर की सुरक्षा में इसका योगदान अद्वितीय था। युद्ध के दौरान यह सेना की एक टुकड़ी को जम्मू-कश्मीर लेकर गया, जिसने पुंछ से हमलावरों को खदेड़ दिया।